**विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987**

समान अवसर के आधार न्याय सुलभ कराने को सुनिश्चित करने के लिये भारत सरकार द्वारा विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 पारित किया गया जिसके द्वारा केन्द्र में राष्ट्रीय विधिक सेवा समिति एवं जिलों में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का गठन किया गया। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण पर एक प्रमुख दायित्व सौंपा गया कि ग्रामीण क्षेत्रों, गरीब बस्तियों या स्लम कालोनियों में समस्त कमजोर वर्गो को उनके अधिकारों के साथ ही लोक अदालतों के माध्यम से विवादों को सुलझाने के लिए प्रात्साहित करने के लिए शिक्षित करने के प्रयोजन से विधिक सहायता शिविरों का आयोजन किया जाय और राज्य प्राधिकरणों पर इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

भारतीय संविधान के अनुछेद 14 में विधि के समक्ष समता का अधिकार दिया गया है और भारतीय संविधान में राज्य की निति के निदेशक तत्व के बारे में बताय गया है जिसमे संविधान के अनुछेद 39 क के तहत राज्य का यह कर्तव्य है कि वह राज्य में यह सुनिश्चित करेगा की विधिक प्रणाली इस प्रकार कार्य करे कि सामान अवसर के आधार पर न्याय शुलभ हो और यह भी सुनिश्चित करे कि आर्थिक या किसी अन्य असमर्थता/ निर्योग्यता के कारण से समाज का कोई भी नागरिक न्याय प्राप्त करने के अवसर से वंचित न रह जाये, इसके लिए उपयुक्त विधान या स्कीम या किसी अन्य रीती से सामान न्याय और निःशुल्क विधिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था करेगा।

**राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) क्या है ? - 1995**

विधि सेवा प्राधिकरण अधिनियम,1987 के तहत राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिरकण का गठन किया गया,जिसके अंतर्गत समाज के गरीब व् कमजोर वर्गों को बिना किसी शुल्क मतलब की निःशुल्क कानूनी सेवाएं प्रदान  करना है और उनके विवादों का सौहार्दपूर्ण निपटारे के लिए लोक अदालतों का आयोजन करना है।

1. NALSA मुख्य कार्यालय 12 /11 जाम नगर हाउस नई दिल्ली में स्थित  है।
2. भारत के मुख्य न्यायाधीश पैट्रन- इन- चीफ है।
3. Second senior most Judge, भारत के सर्वोच्च न्यायालय, प्राधिकरण के कार्यकारी अध्यक्ष है।

**राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण**

भारत के हर एक राज्य में NALSA की नीतियों और निर्देशों को प्रभावशाली बनाए रखने के लिए और समाज के गरीब व् कमजोर वर्गों को निःशुल्क कानूनी सेवाएं पदान कराने के लिए और राज्य में लोक अदालतों का संचालन करने के लिए राज्य में राज्य विधि सेवा प्राधिकरण का गठन किया गया है।

1. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता सम्बंधित कार्य उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश करते है, जो  राज्य सेवा प्राधिकरण के संरक्षक-इन-चीफ है।

**जिला विधिक सेवा प्राधिकरण**

हर जिले में, विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यक्रमों को जिले में लागु करने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का गठन किया गया है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हर एक जिले के जिला न्यायालय के परिसर में स्तिथ है और इसकी अध्यक्षता से सम्बंधित कार्य जिले के जिला न्यायाधीश के द्वारा किया जाता है।

**तालुक विधिक सेवा समिति**

तालुक या मंडल में से हर एक के लिए या तालुक या मंडल के लिए तालुक विधिक सेवा समितियों का भी गठन किया जाता है ताकि तालुक में विधिक सेवाओं की गतिविधियों की वयवस्था की जा सके और लोक अदालतों का आयोजन किया जा सके।

हर एक तालुक विधिक सेवा समिति का संचालन एक वरिष्ठ सिविल जज करते है, जो कि इस समिति के पदेन अध्यक्ष होते है  और जो समिति के अधिकार क्षेत्र में कार्यरत होते है।

**नालसा की निःशुल्क कानूनी सेवाएं कौन सी है ?**

1. कानूनी कार्यवाहियों में अधिवक्ता/वकील/एडवोकेट उपलब्ध कराना।
2. किसी कानूनी कार्यवाही में न्यायालय शुल्क, और देय अन्य अभी प्रभार अदा करना।
3. कानूनी कार्यवाही में आदेशों आदि की प्रमाणित प्रतियों को प्राप्त कराना।
4. कानूनी कार्यवाही में अपील और दस्तावेजों का अनुवाद कराना और छपाई सहित फाइल तैयार करना।

**निःशुल्क विधिक सेवा पाने के पात्र कौन है ?**

विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 की धारा 12 में पात्र व्यक्तियों को निःशुल्क कानूनी सेवाएं पाने के लिए कुछ मानदंड निर्धारित किये गए है। अधिनियम की धारा 12 के तहत जिस व्यक्ति को कोई मामला दर्ज करना हो या किसी मामले में अपना बचाव करना हो वह इस अधिनियम के तहत कानूनी सेवाओं का हकदार होगा यदि वह व्यक्ति निम्नलिखित श्रेणियों में आता होगा जैसे :-

1. महिलाएं एवं बच्चे
2. औद्योगिक श्रमिक
3. हिरासत में रखे गए लोग
4. मानसिक रूप से बीमार या विकलांग व्यक्ति
5. अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के सदस्य
6. संविधान के अनुछेद 23 के तहत मानव तस्करी या बेगार शिकार
7. अवांछनीय परिस्थितयों में व्यक्ति जैसे सामूहिक आपदा, जातीय हिंसा, जातिगत अत्याचार, बाढ़, सूखा, भूकंप या औद्योगिक आपदा के शिकार हुए लोग
8. ऐसे व्यक्ति जिनकी वार्षिक आय नौ हजार रूपये से कम है या ऐसी अन्य उच्च राशि जो राज्य सरकार द्वारा निर्धारित की जा सकती है, यदि मामला उच्चतम न्यायालय के अलावा किसी अन्य न्यायालय के समक्ष है और बारह हजार रूपये से कम या इस तरह की अन्य उच्च राशि, यदि सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष मामला हो , तो केंद्रीय सरकार द्वारा निर्धारित राशि।

**निःशुल्क कानूनी सेवाओं की विशेषताएं क्या है ?**

निःशुल्क कानूनी सेवाएं समाज के उन ग़रीब एवं कमज़ोर वर्गों और हाशिये पर रहने वाले लोगो को के लिए दीवानी और फौजदारी के मामलो में निःशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करने का प्रावधान करती है।

ग़रीब एवं हाशिये पर रहने वाले लोग जो किसी मामले के संचालन के लिए अधिवक्ता की सेवाएं या किसी अन्य न्यायालय, न्यायाधिकरण  या किसी प्राधिकरण में समक्ष कानूनी कार्यवाही नहीं कर सकते उनके लिए यह निःशुल्क कानूनी सेवाएं है।

1. किसी कानूनी मामले पर विधिक सलाह देना
2. कानूनी कार्यवाही में वकील/अधिवक्ता/एडवोकेट द्वारा प्रतिनिधितत्व करना
3. कानूनी कार्यवाहियों में दस्तावेजों की छपाई और अनुवाद करना
4. कानूनी कार्यवाही के लिए अपील या ज्ञापन तैयार करना
5. कानूनी दस्तावेजों का प्रारूप तैयार करना विशेष रूप से अवकाश याचिका का तैयार करना
6. किसी भी न्यायालय या अन्य प्राधिकरण या न्यायाधिकरण के समक्ष किसी मामले या अन्य कानूनी कार्यवाही के संचालन में किसी भी सेवा का प्रतिपादन करना
7. निःशुल्क कानूनी सेवाओं के लाभार्थियों को केंद्र सरक्कार या राज्य सरकार द्वारा बनाई गई कल्याणकारी विधियों एवं योजनाओ के तहत लाभ पहुंचाने के लिए और किसी अन्य तरिके से न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सहायता और सलाह देने का प्रावधान भी शामिल है

**निःशुल्क कानूनी सेवा प्राप्त करने के लिए आवेदन कैसे करना होगा**

निःशुल्क कानूनी सहायता प्राप्त करने के निम्न तरीके हो सकते है:-

1. जिन पात्र व्यक्तियों को निःशुल्क कानूनी सेवाओं की आवश्यकता है, वह एक आवेदन के माध्यम से लिखित रूप में भेजकर सम्बंधित प्राधिकरण या समिति से संपर्क कर निःशुल्क कानूनी सहायता प्राप्त कर सकते है
2. संक्षेप में कानूनी सहायता प्राप्त करने के कारण को उक्त अधिकारियों द्वारा तैयार किया गया प्रपत्रों को भरकर
3. मौखिक रूप से उस मामले से सम्बंधित विधिक सेवा प्राधिकरण या पैरालीगल स्वयंसेवक के अधिकारी व्यक्ति की सहायता से
4. ऑनलाइन आवेदन कर के पात्र व्यक्ति निःशुल्क सहायता प्राप्त कर सकता है, उसके लिए NALSA की अधिकृत वेबसाइट पर जा कर उपलब्ध कानूनी सहायता आवेदन पत्र भरना होगा और साथ में आवश्यक दस्तावेजों को भी अपलोड करना होगा

**आवेदन दाखिल करने के बाद की प्रक्रिया क्या होगी ?**

**1.** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, तालुक विधिक सेवा समितियों, उच्चतम न्यायालय विधिक सेवा समिति और उच्च न्यायालय विधिक सेवा समितियों सहित राष्ट्रीय से तालुका स्तरों तक मौजूद विधिक सेवा प्राधिकरणों के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को कानूनी सहायता प्रदान की जाती है

**यदि** कानूनी सहायता के लिए एक आवेदन या अनुरोध राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के द्वारा प्राप्त किया, तो राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण से सम्बंधित प्राधिकारी को उस आवेदन के लिए प्रेषित किया जाता है

2. एक बार उचित प्राधिकारी के पास आवेदन प्रस्तुत करने के बाद, सम्बंधित विधिक सेवा संस्थान द्वारा उस पर उचित आवश्यक कार्यवाही की जाएगी

3. आवेदन के अलगे चरण के बारे जानकारी सम्बंधित पक्षों को भेजी जाएगी

4. प्राप्त किये गए आवेदन पर की गयी कार्यवाही अलग अलग होगी, पक्षों को परामर्श प्रदान करने से लेकर न्यायालय में उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए एक वकील प्रदान करना

**लोक अदालत क्या है ?**

**विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम-1987 की धारा 19** में लोक अदालत के आयोजन (गठन ) का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक राज्य प्राधिकरण या जिला प्राधिकरण या सर्वोच्च कानूनी सेवा समिति या प्रत्येक उच्च न्यायालय कानूनी सेवा समिति या जैसा भी हो, तालुक कानूनी सेवा समिति ऐसे अंतराल या स्थानों पर लोगो के लिए **लोक अदालत** का आयोजन कर सकती है। लोक अदालत ऐसे क्षेत्रों के लिए इस तरह के क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल कर सकती है जैसा की वह उचित समझती है।

**लोक अदालत** एक ऐसी अदालत / मंच है जहाँ पर न्यायालयों में विवादों / लंबित मामलो या मुकदमेबाजी से पहले की स्थिति से जुड़े मामलो का समाधान समझौते से और सौहार्दपूर्ण तरीके से किया जाता है। इसमें विवादों के दोनों पक्ष के मध्य उत्त्पन हुए विवाद को बातचीत या मध्यस्ता के माध्यम से उनके आपसी समझौते के आधार पर निपटाया जाता है।

**लोक अदालत की शक्तियां क्या है ?**
विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 22 उपधारा (1) के तहत लोक अदालत को इस अधिनियम के अधीन कोई अवधारण करने के प्रयोजन के लिए, वही शक्तियां प्राप्त होंगी जो सिविल प्रक्रिया संहिता 1908 के अधीन सिविल न्यायालय में है।

1. किसी साक्षी को समन कराना, हाजिर कराना और शपथ पर उसकी परीक्षा कराना।
2. किसी दस्तावेज को मगवाना या उसको पेश किया जाना।
3. शपथ पत्र पर साक्ष्य ग्रहण करना।
4. किसी न्यायालय या कार्यालय से किसी लोक दस्तावेज या अभिलेख या ऐसे दस्तावेज या अभिलेख की प्रति की अध्यपेक्षा करना।
5. ऐसे अन्य विषय जो न्यायालय द्वारा विहित किया जाये।

**लोक अदालत के लाभ क्या है?**

1. अधिवक्ता / वकील पर होने वाला खर्चा नहीं लगता है।
2. न्यायालय शुल्कः नहीं लगता है।
3. पक्षकारों के मध्य उतपन्न हुए विवादों का निपटारा आपसी सहमति और सुलह से हो जाता है।
4. मुआवजा व् हर्जाना आदेश के बाद जल्द मिल जाता है।
5. यहाँ तक कि पुराने मुकदमें में लगा न्यायालय शुल्क वापस मिल जाता है।
6. किसी भी पक्षकार को दण्डित नहीं किया जाता है।
7. लोक अदालत द्वारा पक्षकरों को न्याय आसानी से मिल जाता है।
8. लोक अदालत का अवार्ड (निर्णय ) अंतिम होता है जिसके खिलाफ किसी न्यायालय में अपील नहीं होती।

**लोक अदालत में किस प्रकार के मामलो का निपटारा होता है ?**

1. दीवानी सम्बंधित मामले।
2. बैंक ऋण सम्बंधित मांमले।
3. वैवाहिक एवं पारिवारिक झगड़े।
4. राजस्व सम्बंधित मामले।
5. दाखिल ख़ारिज भूमि के पट्टे।
6. वन भूमि सम्बंधित मामले।
7. बेगार श्रम सम्बंधित मामले।
8. भूमि अर्जन से सम्बंधित मामले।
9. फौजदारी सम्बंधित मामले।
10. मोटर वाहन दुर्घटना मुआवजा सम्बंधित दावे।

**लोक अदालत में भेजे जाने वाले मामलो की प्रकृति कैसे होती है ?**

1. लोक अदालत के क्षेत्र के न्यायालय का कोई भी मामला जो किसी भी न्यायालय के समक्ष लंबित है।
2. ऐसे विवाद जो लोक अदालत के क्षेत्रीय न्यायालय में आते हो,  लेकिन जिसे किसी भी न्यायालय में उसके वाद के लिए दायर न किया गया हो और न्यायालय के समक्ष दायर किये जाने की संभावना है।

**लोक अदालत में न भेजे जाने वाले मामले कौन से है ?**

लोक अदालत के समक्ष ऐसे कोई भी मामले नहीं भेजे जायेंगे जिसमे लोक अदालत को ऐसे किसी मामले में या वाद पर अधिकारिता प्राप्त नहीं।

लोक अदालत में ऐसे कोई भी मामलो या वदो के समझौते के लिए नहीं भेजे जायेंगे जो की गंभीर प्रकृति के अपराध होते है जिसमे समझौता या सुलह करने का कोई सवाल नहीं उठता और न ही ऐसे अपराधों में समझौता या सुलह किया जा सकता है।

**लोक अदालत द्वारा मामलो का संज्ञान।**

**विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 20** में लोक अदालत द्वारा मामलों के संज्ञान (विचाराधिकार) का  प्रावधान किया गया है। अधिनियम की धारा 19 की उपधारा (5) खंड (i) में संदर्भित मामले जो किसी न्यायालय के समक्ष लंबित है। पक्षकारों के आग्रह पर न्यायालय ऐसे मामलो के समाधान के लिए लोक अदालत में भेजेगा जहाँ पक्षकार :-

1. जहाँ पक्षकार लोक अदालत में विवाद को सुलझाने के लिए सहमत है।
2. जहाँ पक्षकारों में से कोई एक पक्ष न्यायालय में आवेदन करता है।
3. यदि न्यायालय को यह संज्ञान हो जाता है कि विवादित मामला लोक अदालत में समाधान करने के लिए उपयुक्त है।
4. लेकिन सम्बंधित मामले को न्यायालय द्वारा पक्षकारो के आग्रह पर विवाद के निपटारे के लिए लोक अदालत में भेजने से पहले न्यायालय उभय पक्षों को सुनवाई का पूरा अवसर देगी।

यदि इन प्रयासों के बाद भी पक्षकार के मध्य अपने विवादों के निपटारे के लिए लोक अदालत समझौता या राजीनामा नहीं होता तो वह मामल पुनः उस न्यायालय को प्रेषित कर दिया जाता है जहाँ से वह मामला प्राप्त हुआ था। उस न्यायालय द्वारा उस मामले में फिर उसी स्तर से अग्रिम कार्यवाही प्रारंभ हो जाती है , जिस स्तर से वह मामला लोक अदालत में भेजा गया था।

**लोक अदालत का निर्णय।**

विधक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 21 में लोक अदालत के द्वारा निर्णय दिए जाने का प्रावधान किया गया है।

1. लोक अदालत द्वारा दिए गए प्रत्येक अवार्ड (निर्णय ) को सिविल न्यायालय की डिक्री मानी जाएगी जैसा भी मामला हो।  न्यायालय का आदेश जहाँ किसी मामले के समझौते के लिए लंबित मामले को लोक अदालत में भेजा जाता है और उस मामले में समझौता हो जाता है, तो ऐसे मामले में न्यायालय में मूल रूप से पहले भुगतान किये गए न्यायालय शुक्ल को वादकारी को वापस कर दिया जाता है।
2. लोक अदालत द्वारा दिया गया प्रत्येक अवार्ड अंतिम होगा और यह अवार्ड (निर्णय) विवादों के सभी पक्षकारों पर बाध्यकारी होगा।
3. लोक अदालत के द्वारा दिए गए निर्णय के खिलाफ किसी भी न्यायालय में अपील नहीं की जाएगी।

**लोक अदालत के अवार्ड (निर्णय) के खिलाफ क्या अपील होती है ?**

लोक अदालत को विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 के तहत लोक अदालत को वैधानिक दर्जा दिया गया है। जिसके तहत लोक अदालत के अवार्ड (निर्णय) को सिविल न्यायालय का निर्णय माना जाता है, जो कि दोनों पक्षकारों पर बाध्यकारी होता है। लोक अदालत के अवार्ड (निर्णय) के विरुद्ध किसी भी न्यायलय में अपील नहीं की जा सकती है।

**स्थायी लोक अदालत क्या है ?**

विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 की धारा 22 बी के अंतर्गत स्थायी लोक अदालत का गठन प्रत्येक जनपद में किया जायेगा। स्थायी लोक अदालत द्वारा जनहित सेवाओं से सम्बंधित विवादों का निस्तारण मुकदमा दायर होने से पहले आपसी सुलह - समझौते के आधार पर किया जायेगा। जनहित सेवाओं से पीड़ित कोई भी व्यक्ति अपने विवादों के निपटारे के लिए स्थायी लोक अदालत में आवेदन कर सकता है।

**स्थायी लोक अदालत का अध्यक्ष और सदस्य कौन होता है ?**

1. स्थायी लोक अदालत में एक अध्यक्ष नियुक्त किया जायेगा जो की एक जिला न्यायाधीश या अतिरिक्त जिला न्यायाधीश या जिला न्यायधीश की तुलना में न्यायिक कार्यालय के उच्च पद का व्यक्ति।
2. दो अन्य सस्दय होंगे जिनको जनहित सेवाओं के बारे में अच्छे से पूर्ण  अनुभव होगा। इनकी नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा की जा सकती है, जैसा भी मामला हो, केंद्रीय प्राधिकरण की सिफारिश या राज्य सरकार या राज्य प्राधिकरण द्वारा नियुक्त किया जा सकेगा।

**स्थायी लोक अदालत में किस प्रकार के जनहित सेवाओं से संबंधित विवादों का निपटारा होता है ?**

विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 22 A की उपधारा (b) में जनहित सेवाओं के बारे में बताया गया है जिनसे सम्बंधित विवादों का निपटारा स्थायी लोक अदालत में होता है।

1. यातायात सेवाओं से सम्बंधित विवाद
2. डाकघर या टेलीफोन सेवाओं से सम्बंधित विवाद
3. बिजली, प्रकाश या जलसेवा से सम्बंधित विवाद
4. लोक सफाई व् स्वछता प्रणाली से सम्बंधित विवाद
5. अस्पताल या औषद्यालय में सेवाओं से सम्बंधित विवाद
6. बैंकिंग सेवाओं से सम्बंधित विवाद
7. बीमा सेवाओं से सम्बंधित विवाद

**स्थायी लोक अदालत में विवाद का निपटारा कैसे होता है ?**

स्थायी लोक अदालतों के गठन के पश्चात कोई भी पक्ष जिसका संबंध जनहित सेवाओं जैसे- बिजली, पानी व अस्पताल आदि से है, संबंधित विवादों को निपटाने के लिये स्थायी लोक अदालत में आवेदन कर सकता है

स्थायी लोक अदालत में विवाद के निपटारे के लिए पक्षकारों के द्वारा आवेदन करने पर सबसे पहले उनके मध्य उत्तपन्न हुए विवाद को आपसी सुलह व् समझौते के आधार पर सुलझाने का पूर्ण प्रयास किया जाता है।

आपसी सुलह व् समझौता हो जाने के बाद स्थायी लोक अदालत द्वारा अवार्ड (निर्णय) पारित किया जाता है और यह अवार्ड (निर्णय) दोनों पक्षों पर बाध्यकारी होता है।

यदि पक्षकारों के मध्य उत्तपन्न हुए विवाद का निस्तारण आपसी सुलह व् समझौते के आधार  से नहीं हो पता तो ऐसे में विवाद का निपटारा विवाद के गुण -अवगुण के आधार पर किया जाता है

**स्थायी लोक अदालत के द्वारा दिया जाने वाला निर्णय ?**

स्थायी लोक अदालत के  द्वारा दिए जाने वाला अवार्ड (निर्णय) सिविल न्यायालय की डिक्री की तरह होता है, जो कि विवाद से सम्बंधित पक्षकरों पर अनिवार्य रूप से लागु कराया जाता है और यह अवार्ड विवाद से सम्बंधित पक्षकारों पर बाध्यकारी होता है

स्थायी लोक अदालत अपने किये गए निर्णय के निष्पादन के लिये उसे क्षेत्रीय आधिकारिता रखने वाले न्यायालय के पास भेज सकती है और यह जिस न्यायालय के पास भेजा जाएगा, वह उस निर्णय का पालन उसी प्रकार करवाएगा, जैसे स्वयं द्वारा पारित निर्णय अथवा डिक्री की करवाता है

**स्थिति लोक अदालत के अवार्ड के विरुद्ध क्या अपील हो सकती है?**

स्थायी लोक अदालत के अवार्ड (निर्णय ) के विरुद्ध किसी भी न्यायालय में अपील नहीं दायर की जा सकती है, ऐसा इसलिए कि विवाद का निपटारा विवाद से सम्बंधित पक्षकरों की आपसी सुलह व् समझौते के आधार पर कियता जाता है

लोक अदालतों का सबसे बड़ा गुण निःशुल्क तथा त्वरित न्याय है। ये विवादों के निपटारे का वैकल्पिक माध्यम है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश का कोई भी नागरिक आर्थिक या किसी अन्य अक्षमता के कारण न्याय पाने से वंचित न रह जाए। इन अदालतों से वर्तमान भारतीय न्यायिक प्रक्रिया को नवजीवन मिला है, जो मुकदमों के बोझ तथा महँगे न्याय की समस्या से ग्रसित होकर निष्क्रिय सी हो गई थी। बातचीत और परस्पर समझौते का जो अवसर मुकदमे की प्रारंभिक अवस्था में खो दिया जाता है, वह लोक अदालत नामक नवीन व्यवस्था से देने का प्रयास किया जाता है। यह भी स्मरण रखा जाना चाहिये कि लोक अदालत वर्तमान व्यवस्था का विकल्प नहीं, बल्कि एक पूरक प्रयास है।

The **National Legal Services Authority (NALSA)** has said that around 11,077 undertrials have been released from prisons nationwide as part of the mission to decongest jails following the COVID-19 pandemic.

NALSA has also been providing **assistance to prisoners who were eligible to be released on parole or interim bail under the relaxed norms, through its panel lawyers.**

**About NALSA:**

NALSA has been constituted under **the Legal Services Authorities Act, 1987,** to provide free legal services to weaker sections of society.

The aim is **to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reasons of economic or other disabilities.**

**‘Nyaya Deep’** is the official newsletter of NALSA.

**Composition:**

As per **section 3(2) of Legal Service Authorities Act,** the Chief Justice of India shall be the Patron-in-Chief.

Second senior-most judge of Supreme Court of India is **the Executive-Chairman.**

**Important functions performed by NALSA:**

* Organise Lok Adalats for amicable settlement of disputes.
* Identify specific categories of the marginalised and excluded groups and formulates various schemes for the implementation of preventive and strategic legal service programmes.
* Provide free legal aid in civil and criminal matters for the poor and marginalised people who cannot afford the services of a lawyer in any court or tribunal.

**State and district legal services authorities:**

**In every State,** **State Legal Services Authority** has been constituted to give effect to the policies and directions of the NALSA and to give free legal services to the people and conduct Lok Adalats in the State.  **The State Legal Services Authority is headed** by Hon’ble the Chief Justice of the respective High Court who is the Patron-in-Chief of the State Legal Services Authority.

**In every District,** District Legal Services Authority has been constituted to implement Legal Services Programmes in the District. The District Legal Services Authority is situated in the District Courts Complex in every District and **chaired by the District Judge of the respective district.**

**Persons Who Are Entitled To Get Free Legal Aid Under The Legal Services Authorities Act, 1987**

Criteria for giving legal service are prescribed under the Section 12 of the said Act. Every person who has to file or defend a case shall be entitled to legal services under this Act if that person is –
a. a member of a Scheduled Caste of Scheduled Tribe;

b. a victim of trafficking in human beings or beggar as referred to in Article 23 of the Constitution;

c. a women or a child;

d. a person with disability as defined in Clause (i) of Section 2 of the person with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation)'; Act, 1995

e. a person under circumstances to the underserved want such as beinga victim of mass disaster, ethnic violence, caste atrocity, flood, drought, earthquake or industrial disaster; or an industrial workman; or in custody, including custody in a protective home within the meaning of clause (g) of Section 2 of the Immoral Traffic (prevention) Act, 1956 (104 of 1956), or in a juvenile home within the meaning of clause (j) of Section 2 of the Juvenile Justice Act, 1986 (53 of 1986), or in a psychiatric hospital or psychiatric nursing home within the meaning of clause (g) of Section 2 of the Mental Health Act, 1987 (14 of 1987); or in receipt of annual income less than rupees nine thousand or such other higher amount as may be prescribed by the State Government, if the case is before a court other than the supreme Court, and less than rupees twelve thousand or such other higher amount as may be [prescribed by the Central Government, if the case is before the Supreme Court.

Also, there are factors for disentitlement from getting legal aid - As per rules, the following persons are not entitled to the legal aid unless the Chairman of the Committee approves it as a special case-
(1) Proceedings wholly or partly in respect of defamation or malicious prosecution or any incidental proceedings thereto;

(2) A person charged with contempt of court proceeding or any incidental proceedings thereto;

(3) A person charged with perjury;

(4) Proceedings relating to any election.

(5) Proceedings in respect of offences where the fine imposed is not more than Rs. 50/-

(6) Proceedings in respect of economic offences and offences against social laws, such as, the protection of Civil Rights Act, 1955, and the Immoral Traffic (Prevention) Act, 1956 unless in shc cases the aid is sought by the victim:
The legal aid is also denied where the person seeking the legal services -
(1) is concerned with the proceedings only in a representative or official capacity; or
(2) if a formal party to the proceedings, not materially concerned in the outcome of the proceedings and his interests are not likely to be prejudiced on account of the absence of proper representation.
In the above two circumstances even Chairman cannot sanction legal aid as a special case.

**Need- Constitutional basis:**

**Article 39A of the Constitution of India** provides that State shall secure that the operation of the legal system promotes justice on a basis of equal opportunity, and shall in particular, provide free legal aid, by suitable legislation or schemes or in any other way, to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disability.

**Articles 14 and 22(1)** also make it obligatory for the State to ensure equality before law and a legal system which promotes justice on a basis of equal opportunity to all. Legal aid strives to ensure that constitutional pledge is fulfilled in its letter and spirit and equal justice is made available to the poor, downtrodden and weaker sections of the society.

**Lok Adalat**

NALSA along with other Legal Services Institutions conducts Lok Adalats. Lok Adalat is one of the alternative dispute redressal mechanisms, it is a forum where disputes/cases pending in the court of law or at pre-litigation stage are settled/ compromised amicably. Lok Adalats have been given statutory status under the Legal Services Authorities Act, 1987. Under the said Act, the award (decision) made by the Lok Adalats is deemed to be a decree of a civil court and is final and binding on all parties and no appeal against such an award lies before any court of law. If the parties are not satisfied with the award of the Lok Adalat though there is no provision for an appeal against such an award, but they are free to initiate litigation by approaching the court of appropriate jurisdiction by filing a case by following the required procedure, in exercise of their right to litigate.

There is no court fee payable when a matter is filed in a Lok Adalat. If a matter pending in the court of law is referred to the Lok Adalat and is settled subsequently, the court fee originally paid in the court on the complaints/petition is also refunded back to the parties. The persons deciding the cases in the Lok Adalats are called the Members of the Lok Adalats, they have the role of statutory conciliators only and do not have any judicial role; therefore they can only persuade the parties to come to a conclusion for settling the dispute outside the court in the Lok Adalat and shall not pressurize or coerce any of the parties to compromise or settle cases or matters either directly or indirectly. The Lok Adalat shall not decide the matter so referred at its own instance, instead the same would be decided on the basis of the compromise or settlement between the parties. The members shall assist the parties in an independent and impartial manner in their attempt to reach amicable settlement of their dispute.

**Nature of Cases to be Referred to Lok Adalat**

1. Any case pending before any court.

2. Any dispute which has not been brought before any court and is likely to be filed before the court.

Provided that any matter relating to an offence not compoundable under the law shall not be settled in Lok Adalat.

**Which Lok Adalat to be Approached**

As per section 18(1) of the Act, a Lok Adalat shall have jurisdiction to determine and to arrive at a compromise or settlement between the parties to a dispute in respect of -

(1) Any case pending before; or

(2) Any matter which is falling within the jurisdiction of, and is not brought before, any court for which the Lok Adalat is organised.

Provided that the Lok Adalat shall have no jurisdiction in respect of matters relating to divorce or matters relating to an offence not compoundable under any law.

**How to Get the Case Referred to the Lok Adalat for Settlement**

(A) Case pending before the court.

(B) Any dispute at pre-litigative stage.

The State Legal Services Authority or District Legal Services Authority as the case may be on receipt of an application from any one of the parties at a pre-litigation stage may refer such matter to the Lok Adalat for amicable settlement of the dispute for which notice would then be issued to the other party.

# Regular Lok Adalat

**Types of Regular Lok Adalats**

**Continuous LokAdalat**:

A LokAdalat bench sits continuously for a set number of days to facilitate settlements by deferring unsettled matters to the next date and encouraging parties to reflect on the terms of the mutually accepted settlement before actual settlement.

**Daily LokAdalat:**

This type of LokAdalat is organised on daily basis.

**Mobile LokAdalat**:

These are organised by taking the LokAdalat set up in a Multi-utility van to different areas for resolving petty cases and also spreading legal awareness in the area.

**Mega LokAdalat**:

This is organised in the State on a single day in all courts of the State.

**Levels and Composition of Lok Adalats:**

At the State Authority Level -

The Member Secretary of the State Legal Services Authority organizing the Lok Adalat would constitute benches of the Lok Adalat, each bench comprising of a sitting or retired judge of the High Court or a sitting or retired judicial officer and any one or both of- a member from the legal profession; a social worker engaged in the upliftment of the weaker sections and interested in the implementation of legal services schemes or programmes.

At High Court Level -

The Secretary of the High Court Legal Services Committee would constitute benches of the Lok Adalat, each bench comprising of a sitting or retired judge of the High Court and any one or both of- a member from the legal profession; a social worker engaged in the upliftment of the weaker sections and interested in the implementation of legal services schemes or programmes.

At District Level -

The Secretary of the District Legal Services Authority organizing the Lok Adalat would constitute benches of the Lok Adalat, each bench comprising of a sitting or retired judicial officer and any one or both of either a member from the legal profession; and/or a social worker engaged in the upliftment of the weaker sections and interested in the implementation of legal services schemes or programmes or a person engaged in para-legal activities of the area, preferably a woman.

At Taluk Level -

The Secretary of the Taluk Legal Services Committee organizing the Lok Adalat would constitute benches of the Lok Adalat, each bench comprising of a sitting or retired judicial officer and any one or both of either a member from the legal profession; and/or a social worker engaged in the upliftment of the weaker sections and interested in the implementation of legal services schemes or programmes or a person engaged in para-legal activities of the area, preferably a woman.

**National Lok Adalat**

National Level Lok Adalats are held for at regular intervals where on a single day Lok Adalats are held throughout the country, in all the courts right from the Supreme Court till the Taluk Levels wherein cases are disposed off in huge numbers. From February 2015, National Lok Adalats are being held on a specific subject matter every month.

**Permanent Lok Adalat**

The other type of Lok Adalat is the Permanent Lok Adalat, organized under Section 22-B of The Legal Services Authorities Act, 1987. Permanent Lok Adalats have been set up as permanent bodies with a Chairman and two members for providing compulsory pre-litigative mechanism for conciliation and settlement of cases relating to Public Utility Services like transport, postal, telegraph etc. Here, even if the parties fail to reach to a settlement, the Permanent Lok Adalat gets jurisdiction to decide the dispute, provided, the dispute does not relate to any offence. Further, the Award of the Permanent Lok Adalat is final and binding on all the parties. The jurisdiction of the Permanent Lok Adalats is upto Rs. Ten Lakhs. Here if the parties fail to reach to a settlement, the Permanent Lok Adalat has the jurisdiction to decide the case. The award of the Permanent Lok Adalat is final and binding upon the parties. The Lok Adalat may conduct the proceedings in such a manner as it considers appropriate, taking into account the circumstances of the case, wishes of the parties like requests to hear oral statements, speedy settlement of dispute etc.

**Mobile Lok Adalats** are also organized in various parts of the country which travel from one location to another to resolve disputes in order to facilitate the resolution of disputes through this mechanism.

* **About:**
	+ The term ‘Lok Adalat’ means **‘People’s Court’** and is based on **Gandhian principles.**
	+ As per the **[Supreme Court](https://www.drishtiias.com/important-institutions/drishti-specials-important-institutions-national-institutions/supreme-court-of-india%22%20%5Ct%20%22_blank)**, it is an old form of adjudicating system **prevailed in ancient India** and its validity has not been taken away even in the modern days too.
	+ It is **one of the components of the [Alternative Dispute Resolution](https://www.drishtiias.com/to-the-points/Paper2/alternative-dispute-resolution-adr-mechanisms-paper-2%22%20%5Ct%20%22_blank)** (ADR) system and delivers **informal, cheap and expeditious justice** to the common people.
	+ The **first Lok Adalat camp** was organised in **Gujarat in 1982** as a **voluntary and conciliatory agency** without any statutory backing for its decisions.
	+ In view of its growing popularity over time, it was **given statutory status** under the **Legal Services Authorities Act, 1987.** The Act makes the provisions relating to the organisation and functioning of the Lok Adalats.
* **Organisation:**
	+ The **State/District Legal Services Authority** or the **Supreme Court/High Court/Taluk Legal Services Committee** may organise Lok Adalats at such intervals and places and for exercising such jurisdiction and for such areas as it thinks fit.
	+ Every Lok Adalat organised for an area shall **consist of such number of serving or retired judicial officers and other persons of the area as may be specified** by the agency organising.
		- Generally, a Lok Adalat consists of a **judicial officer as the chairman** and a **lawyer (advocate) and a social worker as members.**
	+ **[National Legal Services Authority](https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/national-legal-services-day%22%20%5Ct%20%22_blank)**(NALSA) along with other Legal Services Institutions **conducts Lok Adalats.**
		- NALSA was constituted under the **Legal Services Authorities Act, 1987** which came into **force on 9th November 1995** to establish a **nationwide uniform network for providing free and competent legal services to the weaker sections** of the society.
* **Jurisdiction:**
	+ A Lok Adalat shall have jurisdiction to determine and to arrive at a compromise or settlement between the parties to a dispute **in respect of:**
		- Any case pending before any court, or
		- Any matter which is falling within the jurisdiction of any court and is not brought before such court.
	+ **Any case** pending before the court can be referred to the Lok Adalat for **settlement if:**
		- Parties agree to settle the dispute in the Lok Adalat or one of the parties applies for referral of the case to the Lok Adalat or court is satisfied that the matter can be solved by a Lok Adalat.
		- In the case of a pre-litigation dispute, the matter can be referred to the Lok Adalat on receipt of an application from any one of the parties to the dispute.
	+ **Matters** such as matrimonial/family disputes, criminal (compoundable offences) cases, land acquisition cases, labour disputes, workmen’s compensation cases, bank recovery cases, etc. are being taken up in Lok Adalats.
	+ However, the Lok Adalat shall have **no jurisdiction in respect of any case or matter relating to an offence not compoundable under any law.** In other words, the offences which are non-compoundable under any law fall outside the purview of the Lok Adalat.
* **Powers:**
	+ The Lok Adalat shall have the **same powers as are vested in a Civil Court under the Code of Civil Procedure** (1908).
	+ Further, a Lok Adalat shall have the **requisite powers to specify its own procedure for the determination of any dispute** coming before it.
	+ All proceedings before a Lok Adalat shall be **deemed to be judicial proceedings within the meaning of the Indian Penal Code** (1860) and every Lok Adalat shall be deemed to be a Civil Court for the purpose of the Code of Criminal Procedure (1973).
	+ An **award** of a Lok Adalat shall be **deemed to be a decree of a Civil Court or an order of any other court.**
	+ Every award made by a Lok Adalat shall be **final and binding on all the parties to the dispute. No appeal shall lie to any court against the award** of the Lok Adalat.
* **Benefits:**
	+ There is **no court fee** and if court fee is already paid the **amount will be refunded** if the dispute is settled at Lok Adalat.
	+ There is **procedural flexibility and speedy trial** of the disputes. There is **no strict application of procedural laws** while assessing the claim by Lok Adalat.
	+ The parties to the dispute can **directly interact with the judge through their counsel which is not possible in regular courts** of law.
	+ The **award by the Lok Adalat is binding** on the parties and it has the status of a decree of a civil court and it is **non-appealable,** which **does not cause the delay** in the settlement of disputes finally.

### Permanent Lok Adalats

* The **Legal Services Authorities Act, 1987** was **amended in 2002** to provide for the establishment of the Permanent Lok Adalats to **deal with cases pertaining to the public utility services** like transport, postal, telegraph etc.
* **Features:**
	+ These have been **set up as permanent bodies.**
	+ It shall consist of **a Chairman** who is or has been a district judge or additional district judge or has held judicial office higher in rank than that of the district judge and **two other persons having adequate experience in public utility services.**
	+ It **shall not have jurisdiction in respect of any matter relating to an offence not compoundable under any law.** The jurisdiction of the Permanent Lok Adalats is upto Rs. 1 Crore.
	+ Before the dispute is brought before any court, any party to the dispute may make an application to the Permanent Lok Adalat for settlement of the dispute. **After an application is made** to the Permanent Lok Adalat, **no party to that application shall invoke jurisdiction of any court** in the same dispute.
	+ It shall **formulate the terms of a possible settlement and submit them to the parties for their observations** and in case the parties reach an agreement, the Permanent Lok Adalat shall pass an award in terms thereof. In case parties to the dispute **fail to reach an agreement,** the Permanent Lok Adalat **shall decide the dispute on merits.**
		- A **major drawback of the Lok Adalats** is that if the parties do not arrive at any compromise or settlement, the **case is either returned to the court of law or the parties are advised to seek a remedy in a court of law.** This causes **unnecessary delay** in the dispensation of justice.
	+ Every award made by the Permanent Lok Adalat shall be **final and binding** on all the parties thereto and **shall be by a majority of the persons constituting** the Permanent Lok Adalat.